"श्रीरामचरितमानस"

दो० सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाई।
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥225

अर्थ : फिर भय प्रेम विनय और बड़े संकोच के साथ दोनों भाई गुरु के चरणकमलों में सिर नवाकर आज्ञा पाकर बैठे ॥

उठे लखनु निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनिकान।
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥
226

अर्थ : रात बीतने पर, मुर्गे का शब्द कानों से सुनकर लक्ष्मण जी उठे। जगत् के स्वामी सुजान श्रीरामचन्द्र जी भी गुरु से पहले ही जाग गये॥

बागु तड़ागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥227

अर्थ: बाग और सरोवर को देखकर प्रभु श्रीरामचन्द्र जी भाई लक्ष्मण सहित हर्षित हुए। यह बाग (वास्तव में) परम रमणीय है जो (जगत् को सुख देने वाले) श्रीरामचन्द्र जी को सुख दे रहा है ॥

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन ॥
228

अर्थ: सखियों ने उसकी दशा देखी कि उसका शरीर पुलकित है और नेत्रों में जल भरा है। सब कोमल वाणी से पूछने लगीं कि अपनी प्रसन्नता का कारण बता।

बलरामकुमार

डॉ. बलरामकुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज
ताजपुर समस्तीपुर